[श्री सीताराम केसरी]

ही नहीं, उन्हें कहूंगा कि इस जजमेंट के अंतर्गत यह जो 5 साल का प्रावधान है, उसमें यह नहीं आता है। अभी प्रोमोशन का जो रूप है, जैसा मैंने कहा कि किसी तरह का इसमें डिस्टरबेंस और कम्प्रोमाइज नहीं है वर्तमान समय में और दूसरी बहुत सारी बातें उठकर आई है, मैं नहीं चाहता कि आपका काफी समय लूं, मुद्दे की बात है कि चाहे मण्डल कमीशन हो, चाहे काका कालेलकर कमीशन हो, चाहे बिरप्पा कमीशन हो--यह पिछड़े वर्गों के संबंध में ही रहा है जो सामाजिक और शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़े रहे हैं, उन्हीं के संबंध में यह कोर्ट में, सुप्रीम कोर्ट में भी 9 जजों के सामने यह प्रश्न गया था, मगर हमारे यहां जो यह इंटरप्रिटेशन है और शिवशंकर जी ने जो बातें कही है, इसीलिए मैं कहता हूं कि इन सारी चीजों को मद्दे नजर रखते हुए इस पर मैं उन से और सारे लोगों से बात कर के निश्चित रूप से निर्णय लूंगा। मगर पुनः मैं कहता हूं कि जहां तक शैड्यूल्ड कास्ट, शेड्यूल्ड ट्राइब्स यानी अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के हित का प्रश्न है, उसमें हमारी सरकार, हमारा दल और मैं प्रतिबद्ध हूं और कोई कम्प्रोमाइज नहीं होगा। यही मैं कहना चाहता हूं।

प्रमोद महाजन (महाराष्ट्र): सारा देश प्रतिबद्ध है, आपके साथ।

उपसभापति: धन्यवाद, मंत्री जी। शिवशंकर जी, बैठिए। आप लोगों को मुबारकबाद देनी है।

VALEDICTORY REMARKS

THE DEPUTY CHAIRMAN: Before I adjourn the House *sine die*, I, on behalf of the Chairman, on behalf of the members of the panel of Vice-Chairman, and on my own behalf, would like to thank all Members for the kind co-operation extended to us in conducting the proceedings of the House.

In this Session, we had the opportunity of welcoming Shri R. K. Narayanan, as our Chairman, on his election as the Vice-President of India. Even in the short period he has been with us, he has, with his great acumen and wisdom, ably guided the proceedings of this House.

The current Session of this House has been a period of great stress, particularly, in the wake of a national tragedy of awesome and terrible dimensions. The House was adjourned several times. Question Hour was dispensed with on four days. In this Session, apart from the deliberations on Ayodhya and connected issues, we discussed the recent floods and cyclonic storm in Southern India, in the form of a Calling-Attention Motion. Members also raised matters of public importance, through 78 Special Mentions.

Ten Government Bills were introduced in the House, and we cleard 14 Bills, including three Constitution (Amendment) Bills. This Session, perhaps, would be remembered, not only for the storms it witnessed, but also for the great multi-party cooperation and cordiality with which the two historic Constitution (Amendment) Bills were passed today, which would help us in strengthening our basic and grassroot democracy.

In the aggregate, we had 18 sitings of the House, occupying nearly 80 hours, and, by any estimate, this Session must be recognised as having been held in an exceptionally important period of the history of our country. The House made its own contribution in taking our great country forward, through these difficult times.

Hon. Members, before I conclude and wish all of you a Merry Christmas and a very happy and prosperous New year . . .

SHRI P. SHIV SHANKER (Gujarat): Same to you, Madam.

THE DEPUTY CHAIRMAN: . . . I would like to convey, on behalf of the House, our sympathy to, and solidarity with, the families who had suffered loss of their kith and kin and loss of their property in the recent great tragedy which our country had witnessed.

May the New Year bring to our beloved nation, peace, amity, prosperity and happiness. May India go from strength to strength as a strong and united nation, wedded to the ideals of secularism, democracy and social justice.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (SHRI M. M. JACAB): Madam Deputy Chairman, it is a very memorable evening because we were able to pass two Constitution Amendment Bills and other necessary legislative business. As you correctly mentioned, this Session though brief was memorable because all the items of Business listed for the Rajya Sabha were complete and we have not left anything incomplete from the planned List of Business. So, I as one who is associated with this, feel really happy for the cooperation extended by all parties and Members in this House. Whenever there were any moments of tensions, we talked to the Members and leaders and we were able to sort them out without any difficulty.

Of course, we had the unfortunate days when several of our countrymen lost their lives. That was reflected and echoed in this House. I and the House also join in the grief and the tragedy and share our sentiments with those people who lost theirlives and property.

I may be failing in my duty if I do not thank the Chairman and you, Madam Deputy Chairman, for the manner in which you were able to conduct the business of the House. I must also thank the Vice-Chairman who were sitting here for long, long hours without any difficulty and they cooperated very well in running the House and making it a success.

Leaders of the opposition parties as well as the ruling party, all of them shared every time every feeling. It was quite easy for them to understand each other and I hope this spirit of understanding will go a long way in our deliberations in the ensuing Budget Session.

I will thank the staff, the security, the watch and ward personnel and others who have been cooperating even during the extended periods of the Session.

I once again all of you for the good cooperation and thank you once again for your guidance and deliberations.

I thank you very much and wish a happy Christmas and a happy New Year.

विपक्ष के नेता (श्री सिकन्दर बख्त): सदर साहिबा, पार्लियामेंट का यह सत्र कुछ गरमी के हालात में गुजरा, आपने भी अपने भाषण में उसका जिक्र किया। दूसरी बात जो आपने उसके साथ साथ कही है, वह यह कि हमारे रिश्ते आपस में बने रहें। मैं तो यह मानता हूं कि सियासी रकाबत भी एक रिश्ते को कायम करती है। खिलाड़ी रहा हूं और जवानी की बात है। एक टीम खालसा न्यूज के नाम से होती थी, जिनसे हमारा खेल बड़ा धमाके का होता था, बहुत तेजी का, निहायत गरमी का होता था। उस टीम में एक साहब तेजा सिंह खेला करते थे कोई

[श्री सिकन्दर बख्त]

45 वर्ष के बाद वह मेरे दफ्तर में आए और चिपट का रोना शुरू कर दिया। मैं यह इसलिए कह रहा हूं कि जो रिश्ते बन जाते हैं, चाहे वह रकावत के आधार पर हों, रकावत लफ्ज राय-बलरीज, आई एम सोरी मुझे यह पीछे से टोक रहे हैं, हालांकि मैंने उस लफ्ज का सत्यानाश कर दिया रायवरती कहकर, रकावत ही खूबसूरत है, तो वह रकावत के आधार पर हों या हमसफरी के आधार पर हों रिश्ते रिश्ते ही रहते हैं। टूट नहीं सकते। शुरू होता है सब, तो कुछ दिनों के बाद जुदा हुए लोग भी मिलते हैं और फिर रकावत के मजे उठते हैं, जैसे कि उठे इस दौरान भी और कुछ ज्यादा ही उठे और जब जदा होने लगते हैं तो शायद उस किस्म की गरमी, उस किस्म की रकावत की कैफियतों की तलाश नजर और दिल करता है। मैं इसको कोई हमेशा के लिए जुदाई तो नहीं मानता हूं, लेकिन है, चन्द दिनों की तो होगी। गर्मी हो, नाराजगी हो, अलग-अलग मजामीन हों, लेकिन अगर हम इस चीज को न भूलें कि हमारा कुछ न कुछ रिश्ता है, दूसरे इसको न भूलें कि हम सब कुछ कहें लेकिन अल्फाज के इंतखाब में कोई कमी न करें तो रिश्तों की मजबूतियां और बढ़ जाती हैं।

आपने कुछ हादसे का जिक्र किया, हम सब का दिल खराब है उस सिलसिले में। खुदा जाने कब यह इफ्तराक और इख्तलाफ का मसला कब जाकर रुकेगा?

सदर साहिबा, मैं अपने अल्फाज को बेजान नहीं देखना चाहता। आपने अपने भाषण में स्ट्रेस और स्ट्रेन का जिक्र किया, मैं अगर यह कहूं कि उस स्ट्रेस और स्ट्रेन का सबसे बड़ा बोझ आपने उठाया और वह स्ट्रेस और स्ट्रेन आपकी मुस्कुराहट को मिटा नहीं सका, उसके लिए आपका शुक्रिया भी अदा करता हूं, मुबारकबाद भी देता हूं।

हम लोग फिर मिलेंगे और उम्मीद करता हूं कि अपने रिश्तों की मजबूती कायम रखेंगे। ...(व्यवधान)...जी, वह वापिस मौजूद है, ज़िन्दगी की निशानी है, क्या कहने हैं। बहुत शुक्रिया अदा करता हूं हम सब की तरफ से हमारे उन साथियों का जो यह मुमकिन बना सके कि इस सदन का कारोबार पूरा कर सकें, जिस हद तक भी कर सकें। सब साहिबान का बहुत-बहुत शुक्रिया और आपका सबसे ज्यादा।

شری سکندر بخت "مدھیہ پردیش":
صدر صاحبہ، پارلیمنٹ کا یہ سشتر کچھ گڑبڑی کے حالات میں گزرا۔ آپ نے بھی اپنے بھاشن میں اس کا ذکر کیا۔ دوسری بات جو آپ نے اس کے ساتھ ساتھ کہی ہے وہ یہ کہ ہمارے رشتے آپس میں بنے رہیں۔ میں تو یہ مانتا ہوں کہ سیاسی رقابت بھی ایک رشتے کو قائم کرتی ہے۔ کھلاڑی رہا ہوں اور جوانی کی بات ہے۔ ایک ٹیم خالصہ بلیوز کے نام سے ہوتی تھی جس سے ہمارا کھیل بڑا کھچاکے کا ہوتا تھا بہت تیزی کا نہایت گرمی کا ہوتا تھا۔ اس ٹیم میں ایک صاحب تیجا سنگھ کھیلا کرتے تھے کوئی شام ورزش کے بعد وہ میرے دفتر میں آئے اور چپٹ کر رونا شروع کر دیا۔ میں یہ اس لئے کہہ رہا ہوں کہ جو رشتے بن جاتے ہیں۔ چاہے وہ رقابت کے آدھار پر ہوں۔

†] [Transliteration in Arabic Script.

نہیں دیکھنا چاہتا۔ آپ نے اپنے بھاشن میں اسٹریس اور اسٹرین کا ذکر کیا میں اگر یہ کہوں کہ اس اسٹریس اور اسٹرین کا سب سے بڑا بوجھ آپ نے اٹھایا اور وہ اسٹریس اور اسٹرین آپ کی مسکراہٹ کو مٹا نہیں سکا اس کے لئے آپ کا بھی شکریہ ادا کرتا ہوں مبارکباد بھی دیتا ہوں۔

ہم لوگ پھر ملیں گے اور امید کرتا ہوں کہ اپنے رشتوں کی مضبوطی قائم رکھیں گے .... مداخلت ... جی وہ واپس موجود ہیں زندگی کی نشانی ہے کیا کہنے ہیں بہت شکریہ ادا کرتا ہوں۔ ہم سب کی طرف سے جانے ان ساتھیوں کا جو یہ ممکن بنائے کہ اس صدن کا کاروبار پورا کر سکیں جس حد تک بھی کر سکیں۔ سب صاحبان کا بہت بہت شکریہ اور آپ کا سب سے زیادہ۔

उपसभापति : सिकन्दर बख्त साहब ने मुस्कुराहट का जिक्र किया। मैं यहां अपने हाउस के मैम्बर्स के साथ एक चीज़ शेयर करना चाहूंगी कि परसों के दिन मैंने उन्हें एक शेर लिखकर भेजा, पता नहीं क्या डिस्कशन हो रहा था, मैं चाहूंगी कि आप भी सुनें, वह मुस्कुराहट के बावजूद भी था :-

हर ऐश-ओ-तरक्की महफिल में,
दिल है कि उमंडने लगता है
क्या जानिए क्यों अक्सर आंखें,
हो जाती हैं पुरनम, क्या कहिए।

†[ ] Transliteration in Arabic Script.

رقابت لفظ۔ راقولریز۔ آئی ایم ساری۔ مجھے یہ پیچھے سے ٹوک رہے ہیں۔ حالانکہ میں نے اس لفظ کا ستیاناس کر دیا راقولری کہہ کر۔ رقابت ہی خوبصورت ہے۔ تو وہ رقابت کے آدھار پر ہوں یا ہمسفری کے آدھار پر ہوں۔ رشتے رشتے ہی رہتے ہیں۔ ٹوٹے نہیں سکتے شروع ہوتا ہے ستر۔ تو کچھ دنوں کے بعد جدا ہوتے لوگ بھی ملتے ہیں اور پھر رقابت کے مزے اٹھتے ہیں۔ جیسے کہ اٹھے اس دوران بھی اور کچھ زیادہ ہی اٹھے اور جدا جدا ہونے لگتے ہیں تو شاید اس قسم کی کمی۔ اس قسم کی رقابت کی کیفیتوں کی تلاش نظر اور دل کرتا ہے۔ میں اس کو کوئی ہمیشہ کے لئے جدائی تو نہیں مانتا ہوں لیکن ہے چند دنوں کی تو ہوگی کمی ہوگی ناراضگی ہو۔ الگ الگ مضامین ہوں لیکن اگر ہم اس چیز کو نہ بھولیں۔ کہ ہمارا کچھ نہ کچھ رشتہ ہے۔ دوسرے اس کو نہ بھولیں کہ ہم سب کچھ کہیں لیکن الفاظ کے انتخاب میں کوئی کمی نہ کریں تو رشتوں کی مضبوطی اور بڑھ جاتی ہے۔

آپ نے کچھ حادثے کا ذکر کیا۔ ہم سب کا دل خراب ہے اس سلسلہ میں۔ خدا جانے کب یہ افتراق اور اختلاف کا مسئلہ کب جا کر رکے گا۔

صدر صاحبہ۔ میں اپنے الفاظ کو بحال

†[ ] Transliteration in Arabic Script.

[उपसभापति]

क्योंकि कितना भी कुछ हम लोग कहें, मगर जो हादसे हमारे समाज में, हमारे मुल्क में होते हैं, हम हंसते रहें, मगर हमारे दिल में उनकी चुभन हमेशा रहती है। मैं हाउस एडजार्न करने से पहले यह बात कहूंगी कि चेयरमैन साहब की इजाजत से और इन्स्ट्रक्शन्स से आज अपने हाउस को साइन डाई एडजार्न करने से पहले "वन्दे मातरम" की धुन हाउस में बजाई जाएगी।

[Vande Mataram was played]

THE DEPUTY CHAIRMAN: With all my best wishes to all of you for a Happy and Prosperous New Year, I adjourn the House *sine die*.

The House then adjourned *sine die* at fifty-four minutes past nine of the clock.